\Hindi

Prapatti Darshana Sutrani

प्रपत्तिदर्शनसूत्राणि

Document Information

Text title : Prapatti Darshanam Sutrani

File name : prapattidarshanasUtrANi.itx

Category : raama, rAmAnanda, prapatti

Location : doc_raama

Author : rAmaharShaNadAsajI

Proofread by : Mrityunjay Rajkumar Pandey

Latest update : June 20, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanskript**.

June 20, 2024

sanskritdocuments.org

प्रपत्तिदर्शनसूत्राणि

सूत्रः- अथातो प्रपत्ति व्याख्यास्याम् ॥ १॥
सत्रार्थ- अब प्रभुप्रपत्ति के रहस्यार्थ को कहा जा रहा है ।

सूत्रः- अज्ञ; प्रज्ञयोः मूलेच्छा एकैव भवति ॥ २॥
सूत्रार्थ- अज्ञानी और ज्ञानी के हृदय की मूल कामना एक ही होती है ।

सूत्रः- सा सुखेच्छा ॥ ३॥
सूत्रार्थ- वह है सुख की इच्छा ।

सूत्रः- आनन्दांशेन जातः ॥ ४॥
सूत्रार्थ- आनन्दमय परब्रह्म का अंश होने से अर्थात् आनन्दमय से प्रकट होने के कारण ।

सूत्रः- स किं त्रितापेन तपति ॥ ५॥
सूत्रार्थ- वह (जीव)क्यों त्रिताप से तपता रहता है?

सूत्रः- तस्यान्वेषणं मृग मरीचिकावत् ॥ ६॥
सूत्रार्थ- जीवों के सुख पाने का प्रयास मृग-मरीचिकावत् भ्रम स्वरूप है ।

सूत्रः- वेदार्थं मननीयम् ॥ ७॥
सूत्रार्थ- वेदार्थ का अनुसन्धान करके तदाकार हो जाना चाहिए ।

सूत्रः- वेदार्थं केन विजानीयात् ॥ ८॥
सूत्रार्थ- वेदार्थ किसके द्वारा जाना जाय?

सूत्रः- इतिहास पुराणाभ्याम् ॥ ९॥
सूत्रार्थ- इतिहास और पुराण वेदोपवृंहण हैं अतः वेद का अर्थ इन्हीं से निश्चय करना चाहिये ।

सूत्रः- उभयोर्मध्ये इतिहासः प्रबलः ॥ १०॥
सूत्रार्थ- दोनों में इतिहास श्रेष्ठ ठहरता है ।

सूत्रः- रामायणं महाभारतौ चेतिहासद्वयम् ॥ ११॥
सूत्रार्थ-रामायण और महाभारत दो इतिहास हैं ।

सूत्रः- उभयोरनयोः रामायणैव श्रेष्ठः ॥ १२॥
सूत्रार्थ- इन दोनों में श्रीमद् रामायण श्रेष्ठतर है ।

सूत्रः- रामायणोक्तं सीतायाः पुरुषकार वैभवं प्रसिद्धं अतो पुरुषकार समये के के गुणाः श्रीमपेक्षिताः ॥ १३॥
सूत्रार्थ- श्रीवाल्मीकि रामायण में कहा हुआ श्रीसीताजी का पुरुषकार वैभव प्रसिद्ध है अतः जिज्ञासा होती है कि पुरुषकार करने वाली श्रीसीताजी में कौन-कौन गुण अपेक्षित होकर रहते हैं, जिसके कारण श्रीसीताजी की कही हुई, कल्याण वार्ता को श्रवणकर, श्रीरामजी जीव-कल्याण में तत्पर हो जाते हैं ।

सूत्रः- कृपा पारतन्त्र्य अनन्यार्हत्वचापेक्षित गुणाः ॥ १४॥
सूत्रार्थ- पुरुषकार कार्य के लिये कर्ता में कृपा-पारतन्त्र्य और अनन्यार्हत्व गुण अपेक्षित हैं ।

सूत्रः- अपि च शमदमादयः ॥ १५॥
सूत्रार्थ- पुरुषकार कर्ता में शमदमादि गुणों का भी दर्शन होना आवश्यक है ।

सूत्रः- काय सम्पत्तिरपि समुद्रवत् ॥ १६॥
सूत्रार्थ- श्रीसीता जी में देह-वैभव के सिन्धु का सदा एक रस दर्शन होता रहता है ।

सूत्रः- उपदेशेन उभयोर्वशीकर्तुं समर्था ॥ १७॥
सूत्रार्थ- श्रीजानकी जी उपदेश के द्वारा ईश्वर और जीव इन दोनों को वश में करने के लिये समर्थ हैं ।

सूत्रः- ईश्वरं (रामं)स्वदेह-वैभवेन, जीवं कृपयाच ॥ १८॥
सूत्रार्थ- ईश्वर श्रीराम को स्वसौन्दर्य से और जीव को अहैतुकी कृपा से वश में करती है ।

सूत्रः- उभयोर्स्वातन्त्र्यं नश्यति ॥ १९॥
सूत्रार्थ- वश में करने से ईश-जीव का स्वातन्त्र्य नष्ट हो जाता है ।

सूत्रः- आचार्य मुखेन सीतायाः कार्यमेव ज्ञापितम् ॥ २०॥
सूत्रार्थ- आचार्य मुख से श्रीसीता जी का पुरुषकार कार्य ही जाना जाता है ।

सूत्रः- ईश्वरोपि पुरुषकारापेक्षितः ॥ २१॥
सूत्रार्थ- ईश्वर भी पुरुषकार अपेक्षित है ।

सूत्रः- रामे पुरुषकारत्वं श्रियां रक्षकत्वं न दृष्यते ॥ २२॥
सूत्रार्थ- श्रीराम जी में पुरुषकारत्व और श्रीसीता जी में रक्षकत्व का दर्शन नहीं होता ।

सूत्रः- पारतन्त्र्यं विनश्यति ॥ २३॥

सूत्रार्थ- श्रीसीता जी यदि रक्षक बन जाए तो उनका प्रभु-पारतन्त्र्य नष्ट हो जायगा ।

सूत्रः- अकिञ्चनत्व, आर्तित्व, अगतित्व, त्रयदशामाश्रित्य ईश्वर सन्निधौ तवास्मीति च याचनं अधिकारी कृत्यम् ॥ २४॥
सूत्रार्थ- अकिञ्चनत्व, आर्तित्व और अगतित्व के साथ, मैं आपका हूँ कहना प्रभु से, अधिकारी कृत्य है ।

सूत्रः- प्रभु-प्रवृत्ति-निवृत्ति-स्वप्रवृत्ति-निवृत्तिः प्रपत्तिः ॥ २५॥
सूत्रार्थ- श्रीराम जी की प्रवृत्ति का निरादर करने का अर्थात् न मानने का जो जीव का स्वभाव बन गया है, उसकी निवृत्ति हो जाना ही प्रपत्ति है ।

सूत्रः- प्रकर्षेणपत्तिः प्रपत्तिः ॥ २६॥
सूत्रार्थ- प्रकर्षतया प्रणम्य को प्रणाम करना प्रपत्ति है ।

सूत्रः- प्रति-पत्तिः प्रपत्तिः ॥ २७॥
प्रति सम्बन्धी (शारण्य)को सर्वसमर्पण पूर्वक प्रणाम करना प्रपत्ति कहलाती है ।

सूत्रः- प्रपतति प्रपत्तिः ॥ २८॥
सूत्रार्थ- अश्रु, शरीर और अहममादि का प्रभु-चरणों में गिर जाना प्रपत्ति है ।

सूत्रः- प्रपत्तिं न्यासोऽपि कथ्यते ॥ २९॥
सत्रार्थ- प्रपत्ति विद्या को न्यास विद्या भी कहते हैं ।

सूत्रः- गृह-रक्षकौ शरणमुच्यते ॥ ३०॥
सूत्रार्थ- गृह और रक्षक को शरण कहते हैं ।

सूत्रः- त्रिकरणेन त्रयः ॥ ३१॥
सूत्रार्थ- मनसा-वचसा और कर्मणा भेद से प्रपत्ति तीन प्रकार की होती है ।

सूत्रः- षड़ विधा शरणागतिः ॥ ३२॥
सत्रार्थः- शरणागति छः प्रकार की होती है ।

सूत्रः- अनुकूलस्य सङ्कल्पः ॥ ३३॥
सूत्रार्थ- प्रपत्ति का प्रथम अङ्ग प्रभु के अनुकूल रहने का सङ्कल्प है ।

सूत्रः- प्रतिकूलस्य वर्जनम् ॥ ३४॥
सुन्नार्थ- प्रपत्ति का दूसरा अङ्ग है प्रभु-प्रतिकूलता का त्याग ।

सूत्रः- रक्षिष्यतीति विश्वासः ॥ ३५॥
सूत्रार्थ- प्रभु हमारी रक्षा अवश्य करेङ्गे, ऐसा महाविश्वास प्रपत्ता के हृदय में होना चाहिये ।

सूत्रः- गोप्तृत्व वरणं तथा ॥ ३६॥
सूत्रार्थ- प्रपत्ति करने वाले को शारण्य से, अपनी रक्षा करने के लिये प्रार्थना करनी चाहिये ।

सूत्रः- आत्म-निक्षेपम् ॥ ३७॥
सूत्रार्थ- शरणागत चेतन को शारण्य के चरणों में आत्मसमर्पण कर देना ही शरणागति है ।

सूत्रः- कार्पण्यम् ॥ ३८॥
सूत्रार्थ- शरणागति काल में शारण्य के सम्मुख अपनी कार्पण्यता निवेदन करनी चाहिये ।

सूत्रः- देश नियमोनास्ति ॥ ३९॥
सूत्रार्थ- शरणागति के लिये कोई देश-विशेष का नियम नहीं है ।

सूत्रः- प्रपत्तेः कालस्यापि ॥ ४०॥
सूत्रार्थ- प्रपत्ति करने के लिये कोई काल विशेष का भी नियम नहीं है ।

सूत्रः- नैवनियमोऽधिकारिणः ॥ ४१॥
सूत्रार्थ- प्रपत्ति करने वाले अधिकारी के लिये भी कोई नियम नहीं है ।

सूत्रः- अज्ञ-प्रज्ञ भक्ताश्च ॥ ४२॥
सूत्रार्थ- अज्ञानी-विज्ञानी एवं भक्ति प्रिय भक्तादि, सभी भगवत प्रपत्ति कर सकते हैं ।

सूत्रः- न शुद्धिरपेक्षिता ॥ ४३॥
सूत्रार्थ- शुद्धयाशुद्धि का भी कोई नियम नहीं है, प्रपत्ति समय में ।

सूत्रः- फल नियमोऽपि नास्ति ॥ ४४॥
सूत्रार्थ- प्रपत्ति करने के फल का भी कोई नियम नहीं है ।

सूत्रः- प्रपत्ति-धर्मैव प्रपत्तेर्नियमः ॥ ४५॥
सूत्रार्थ- प्रपतति धर्म के अनुसार स्थिति अपनाना ही प्रपत्ति का नियम है ।

सूत्रः- न कोऽपि प्रायश्चितो प्रपत्तेः ॥ ४६॥
सूत्रार्थ- प्रपत्ति भ्रष्ट होने पर उसका कोई प्रायश्चित नहीं है ।

सूत्रः- स्वयमेव प्रपत्तिरस्ति ॥ ४७॥
सूत्रार्थ- प्रपत्ति-पथ के पथिक को पथ-भ्रष्ट हो जाने पर पुनः प्रपत्ति-पथ को अपना लेना उसका प्रायश्चित है ।

सूत्रः- ममेति चाहंश्चानुरक्तिरशुद्धिः ॥ ४८॥
सूत्रार्थ- अहं और मं तथा इनके कार्यों में अनुरक्ति होना प्रपत्ति की अशुद्धि है ।

सूत्रः- उपायेनापि स्वीकारा प्रपत्तिः अशुद्धाभवति ॥ ४९॥

सूत्रार्थ- उपायतया स्वीकार करने से भी सिद्ध-साधन प्रपत्ति में अशुद्धि आ जाती है ।

सूत्रः- प्रपत्तिः अधिकारं कथयति ॥ ५०॥
सूत्रार्थ- शरणागति यह बतलाती है कि, हे शारण्य ! यह शरणागत रक्षा पाने का अधिकारी है ।

सूत्रः- प्रपत्तिः स्वरूपं प्रकाशयति ॥ ५१॥
सूत्रार्थ- प्रपत्ति चेतन के स्वरूप को प्रकाश में लाती है ।

सूत्रः- अयमात्मा ब्रह्मदासः श्रुतिर्वदति ॥ ५२॥
सूत्रार्थ- यह जीवात्मा परमोत्मा का दास है, ऐसा श्रुति का सिद्धान्त है ।

सूत्रः- रक्षकत्वेननावलम्बनीयानि साधनान्तराणि ॥ ५३॥
सूत्रार्थ- साधननान्तरों को रक्षक मानकर अवलम्बन नहीं लेना चाहिये शरणागत को ।

सूत्रः- सर्वधर्ममयी प्रपत्तिः ॥ ५४॥
सूत्रार्थ- शरणागति सर्व धर्ममय है ।

सूत्रः- द्वयमन्त्रोच्चारण कर्मणा युक्तम् ॥ ५५॥
सूत्रार्थ- द्वयमन्त्र के उच्चारण रूप कर्म योग से युक्त है, प्रपत्ति ।

सूत्रः- अर्थ पञ्चक ज्ञानैनापियुक्तम् ॥ ५६॥
सूत्रार्थ- अर्थ पञ्चक ज्ञान से प्रपत्ति सर्वथा युक्त है ।

सूत्रः- भक्तिरपि दृश्यते ॥ ५७॥
सूत्रार्थ- प्रपत्ति में भक्ति का भी पूर्ण दर्शन होता है ।

सूत्रः- योगः पदे पदे ॥ ५८॥
सूत्रार्थ- अष्टाङ्ग योग तो प्रपत्ति परक मन्त्र में पद-पद में दिखाई देता है ।

सूत्रः- न सहते साधनान्तराणि ॥ ५९॥
सूत्रार्थ- शरणागति अन्य उपायों को नहीं सहती, उपाय रूप में ।

सूत्रः- सर्वलोक शारण्योपि भविष्य कालं न सहते ॥ ६०॥
सूत्रार्थ- सर्वलोक शारण्य, शरणागत को फल देने के समय भविष्य काल को नहीं सहते ।

सूत्रः- प्रपत्तिर्ग्राह्या मुमुक्षुभिः ॥ ६१॥
सूत्रार्थ- सिद्ध साधन शरणागति मुमुक्षु के द्वारा ग्राह्य है ।

सूत्रः- सकृदेव, भगवद् वाक्यम् ॥ ६२॥
सूत्रार्थ- भगवद्वाक्य के अनुसार एक बार की हुई शरणागति ही फल प्रदान करने में पर्याप्त है ।

सूत्रः- इष्टप्रीतेर्वशात् पुनर्पुनः ॥ ६३॥
सूत्रार्थ- अपने आराध्य की प्रीति के वश में होकर बार-बार शरणागति की जा सकती है ।

सूत्रः- अन्तराय हानि हेतुत्वादपि ॥ ६४॥
सूत्रार्थ- शारीरिक और मानसिक विघ्न उपस्थित न हो इसलिये भी बारबार प्रपत्ति की जा सकती है ।

सूत्रः- कालक्षेपाय ॥ ६५॥
सूत्रार्थ- कालक्षेप के लिये भी शरणागति मन्त्र बार-बार उच्चारण किया जा सकता है ।

सूत्रः- नासमर्थात् सा स्वरूपत्वात् ॥ ६६॥
सूत्रार्थ- प्रपत्ति स्वरूपानुकूल होने से ग्रहणीय है न कि साधनों की असमर्थता से ।

सूत्रः- असमर्पितस्य कुतः प्रेमसुखम् ॥ ६७॥
सूत्रार्थ- प्रेमास्पद को सर्व समर्पण किये बिना प्रेम सुख अति दुर्लभ है ।

सूत्रः- मुण्डे-मुण्डे मतिर्भिन्न्ना ॥ ६८॥
सूत्रार्थ- प्रत्येक व्यक्तियों की बुद्धि भिन्न-भिन्न होती है ।

सूत्रः- बहवः प्रकाराः ॥ ६९॥
सूत्रार्थ- प्रपत्ति अन्य साधनों से बहुत प्रकार से श्रेष्ठ है ।

सूत्रः- अतो कर्म ज्ञान भक्ति योगेभ्योऽपि प्रपत्तिरेव सर्व श्रेष्ठा सर्वे वदन्ति ॥ ७०॥
सूत्रार्थ- सभी शास्त्र-पुराण-इतिहास और सन्तजन प्रपत्ति को सर्वश्रेष्ठ बतलाते हैं ।

सूत्रः- नार्धक्षणमपि पृथक भूता भवति ॥ ७१॥
सूत्रार्थ- श्री जी भगवान से एक क्षण के लिये भी एथक नहीं होतीं ।

सूत्रः- सीताविशिष्टोरामः: प्रपत्त्यर्थाय ॥ ७२॥
सूत्रार्थ- सीता शक्ति से सम्प्रोत श्रीराम जी प्रपत्ति-पथ के सिद्धि के लिये ही हैं ।

सूत्रः- अर्चावतारे प्रपत्तिः स्वीकार्या ॥ ७३॥
सूत्रार्थ- सदाचार्यों, श्रुतियों और शास्त्रों से अर्चावतार में प्रपत्ति करना स्वीकार है ।

सूत्रः- तस्मिन् पूर्णात् पूर्णाः कल्याणगुणगणाः ॥ ७४॥
सूत्रार्थ- क्योकि अर्चा भगवान में सम्पूर्ण दिव्य कल्याण गुणगण विद्यमान है ।

सूत्रः- सौलभ्येन श्रेष्ठः ॥ ७५॥
सूत्रार्थ- सर्व सौलभ्य गुण के द्वारा तो पर, व्यूहादि से भी श्रेष्ठ है ।

सूत्रः- भक्त पारतन्त्र्यमपि ॥ ७६॥

सूत्रार्थ- भक्ताधीन सतत रहने के कारण भी सर्वश्रेष्ठ है ।

सूत्रः- क्षमया पृथ्वी समः ॥ ७७॥
सूत्रार्थ- अर्चा भगवान क्षमा में पृथ्वी के सदृश हैं अतः सर्वश्रेष्ठ हैं ।

सूत्रः- (तस्मिन)अक्रोधः ॥ ७८॥
सूत्रार्थ- अर्चावतार में स्थायी अक्रोध का दर्शन होता है ।

सूत्रः- नाशक्तिकः ॥ ७९॥
सूत्रार्थ- अर्चा भगवान अशक्तिक अर्थात् शक्तिहीन नहीं हैं ।

सूत्रः- एवं सर्वेगुणाः आश्रयन्ति ॥ ८०॥
सूत्रार्थ- इस प्रकार सभी दिव्य कल्याण गुण अर्चा विग्रह का आश्रय लिये हैं ।

सूत्रः- स अज्ञ तज्ञाभ्याँ शारण्यः ॥ ८१॥
सूत्रार्थ- अर्चा भगवान ज्ञानी-अज्ञानी दोनों के सर्वभावेन रक्षक हैं ।

सूत्रः- स्वयं व्यक्त-दैव-सैद्ध-मानुषाः प्रकाराः ॥ ८२॥
सूत्रार्थ- अर्चा विग्रह स्वयं व्यक्त-दैव, सैद्ध और मानुष भेद से चार प्रकार के होते हैं ।

सूत्रः- ब्रह्म प्राप्तेर्जिज्ञासा ॥ ८३॥
सूत्रार्थः- प्रथम तो अधिकारी के हृदय में ब्रह्म-प्राप्ति की इच्छा होनी चाहिये ।

सूत्रः- सदाचार्य वरणम् ॥ ८४॥
सूत्रार्थ- ब्रह्म जिज्ञासा के पश्चात् सद्गुरु वरण करना चाहिये ।

सूत्रः- गुरुणा पञ्च संस्कारैः संस्कृतः ॥ ८५॥
सूत्रार्थ- सदाचार्य के द्वारा पञ्च संस्कारों से संस्कृत होने का विधान है ।

सूत्रः- ऊर्ध्वपुण्ड्र धराः सर्वे प्रपत्तिपथानुगामिनः ॥ ८६॥
सूत्रार्थ- शरणागत सभी चेतन ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक धारण कर प्रथम संस्कार से संस्कृत होते हैं ।

सूत्रः- तुलसिका दाम कण्ठः ॥ ८७॥
सूत्रार्थ- शरणागत वैष्णव का कण्ठ में तुलसी की माला धारण करने वाला दूसरा संस्कार होता है ।

सूत्रः- धनुर्बाणाङ्किताश्च बाहुमूले ॥ ८८॥
सूत्रार्थ- प्रपत्ति कर्ता वैष्णव के धनुर्बाणादि रामायुध से बाहुमूल को अङ्कित करना तीसस संस्कार होता है ।

सूत्रः- रहस्य त्रयोपदेशः ॥ ८९॥

सूत्रार्थ- शरणागत वैष्णव को रहस्य त्रय मन्त्रों का उपदेश आचार्य से प्राप्त करना चतुर्थ संस्कार होता है ।

सूत्रः- मन्त्रे हस्तगते तद्देवो हस्तगतः ॥ ९०॥
सूत्रार्थ- रहस्यत्रय मन्त्र के हस्तगत होने पर मन्त्र के देवता हस्तगत हो जाते हैं ।

सूत्र- भगवन्नाम पूर्वक दासान्त नामधेयम् ॥ ९१॥
सूत्रार्थ- सदाचार्य शरणागत वैष्णव को भगवन्नाम पूर्वक दासान्त नाम देते हैं ।

सूत्रः- रहस्य त्रयार्थस्योपदेशः ॥ ९२॥
सूत्रार्थ- पुनः सदाचार्य शिष्य की जिज्ञासा व योग्यता देखकर, अधिकारी शिष्य को रहस्यत्रय के अर्थ का उपदेश करते हैं ।

सूत्रः- ब्रह्म सम्बन्धेन शिष्यान् बन्धयति ॥ ९३॥
सूत्रार्थ- सद्गुरु शिष्य की प्रीति-प्रतीति की परीक्षा कर, रसानुभूति के लिये उसको ब्रह्म-सम्बन्ध से सम्बन्धित करते हैं ।

सूत्रः- प्रभु प्रपत्तिं कृत्वा शिष्यगुणान् वर्धयति ॥ ९४॥
सूत्रार्थ- कृपामूर्ति आचार्य ईश्वर की शरणागति (प्रार्थना)कर करके शिष्य के सद्गुणों का वर्द्धन करते हैं ।

सूत्रः- सर्व समर्थोऽपि आकिञ्चनत्वं धारयति ॥ ९५॥
सूत्रार्थ- सदाचार्य सर्व समर्थ होते हुये भी, अपने को सदा आकिञ्चनत्व के आसन पर आसीन कराये रहते हैं ।

सूत्रः- न हानिः न न्यूनः ॥ ९६॥
सूत्रार्थ- आचार्याभिमान से न कोई हानि है और न अन्योपायो से वह कम ही है ।

सूत्रः- पूर्ण परब्रह्मवत् आचार्य स्वरूपः ॥ ९७॥
सूत्रार्थ- आचार्य का स्वरूप पूर्ण परब्रह्म के स्वरूप से भिन्न नहीं है ।

सूत्रः- ईश्वरः कर्मफलप्रदानायोन्मुखः आचार्यः मोक्षप्रदातुमुन्मुखः ॥ ९८॥
सूत्रार्थ- ईश्वर जीवों के कर्मानुसार फल देने वाले हैं किन्तु आचार्य सभी जीवों को मोक्ष मार्ग में चलाने वाले हैं ।

सूत्रः- ईश्वरादज्ञानस्याप्युत्पत्तिः न तु आचार्यात् ॥ ९९॥
सूत्रार्थ- ईश्वर से अज्ञान की भी उत्पत्ति होती है किन्तु आचार्य से नहीं, वे मात्र ज्ञान-किरणों को ही बिखेरते हैं ।

सूत्रः- आचार्य तृषार्तानां हस्तगतं जलमिव नं तु ईश्वर ॥ १००॥
सूत्रार्थ- प्यासे के लिये आचार्य हस्तगत स्वर्ण कलशी के मधुर जल के समान है किन्तु ईश्वर नहीं ।

सूत्रः- मुमुक्षूणामाचार्यम्परित्य मात्र भगवदाश्रयोऽपि हस्तगतञ्जलं त्यक्त्वा वरण जलेच्छावत् ॥ १०१॥
सूत्रार्थ- आचार्य को छोड़कर मात्र भगवदाश्रय भी मुमुक्षुओं के लिये हस्तगत जल को छोड़कर प्यास बुझाने के लिये प्रकृति पार विरजाजी के जल की इच्छा करना है ।

सूत्रः- दृष्वस्तुराचार्यः तस्माददृष्ट वस्तुरीश्वरः ॥ १०२॥
सूत्रार्थ- इसलिये कि आचार्य दृष्ट पथ की वस्तु है और ईश्वर अदृष्ट है ।

सूत्रः- स्वर्ण च स्वर्णालङ्कार मिव ॥ १०३॥
सूत्रार्थ- स्वर्ण और स्वर्णालङ्कार की भाँति आचार्य और ईश्वर को शरणागत चेतन जानता है ।

सूत्रः- यो आचार्यवान्नास्ति स ईश्वराप्रियः ॥ १०४॥
सूत्रार्थ- जो आचार्यवान नहीं है, वह ईश्वर को प्रिय नहीं लगता ।

सूत्रः- वारि विहीनं कमलं रविर्न पोषयति तेजेन शोषयति ॥ १०५॥
सूत्रार्थ- जल बिहीन कमल को सूर्य पोषण नहीं करते उलटे जला डालते हैं ।

सूत्रः- अतः आचार्य वरणं परमेश्वराभिमतम् ॥ १०६॥
सूत्रार्थ- अतः आचार्य वरण करना, परमेश्वर को अभिमत है ।

सूत्रः- न दोष-स्पर्शः ॥ १०७॥
सूत्रार्थ- आचार्याभिमानी को, भगवान को रक्षक न मानने का दोष-स्पर्श नहीं करता ।

सूत्रः- आचार्याभिमानम्वश्यमेव कार्यम् ॥ १०८॥
सूत्रार्थ- आचार्याभिमान रूप पञ्चमोपाय अवश्यमेव ग्रहणीय है ।

सूत्रः- आचार्याभिमानिनां गुरुरेव गतिः ॥ १०९॥
सूत्रार्थ- आचार्याभिमानी की परमगति सदगुरु ही होते हैं ।

सूत्रः- भगवत् कैङ्कर्यमपि आचार्य मुखोल्लासार्थम् ॥ ११०॥
सूत्रार्थ- आचार्य-परायण वैष्णव का भगवत्-कैङ्कर्य भी आचार्य की प्रसन्नता के लिये होता है ।

सूत्रः- आचार्याभिमानिनं सर्वभावेन भगवद्-प्रसादस्य प्राप्तिर्भवति ॥ १११॥
सूत्रार्थ- आचार्य-परायण प्रपत्ता को सर्वभावेन भगवान की पूर्णकृपा प्रसाद की प्राप्ति होती है ।

सूत्रः- सर्व-प्रियोभवति ॥ ११२॥

सूत्रार्थ- आचार्य को सर्वस्व समझने वाला वैष्णव, सबका प्रिय बन जाता है ।

सूत्रः- एकैव धर्माचारः परस्परं परमा प्रीतिः ॥ ११३॥
सूत्रार्थ- आचार्य को सर्वस्व मानने वाले तथा भगवान को मानने वाले दोनों भक्तों में परस्पर प्रीति और दोनों की धर्मचर्या एक ही होती है ।

सूत्रः- भगवतः सौन्दर्यादिकाय सम्पत्तयः कल्याण गुणगणाश्चावरोधयन्ति ॥ ११४॥
सूत्रार्थ- भगवान के सौन्दर्यादि देह-वैभव और दिव्य गुणगण आचार्याभिमान में अवरोध करते हैं ।

सूत्रः- आचार्य-देह वैभवः मनुष्यवत् गुणाः ईश्वरवत् ॥ ११५॥
सूत्रार्थ- आचार्य देह का वैभव मनुष्य की तरह तथा दिव्य गुण-गण ईश्वर की भाँति होते हैं ।

सूत्रः- सुलभो भगवदनुरक्तिर्नाचार्यस्य ॥ ११६॥
सूत्रार्थ- भगवान की आनुरक्ति सुलभ है किन्तु आचार्य की कठिन है ।

सूत्रः- भगवद्गुण स्मरणेन भव प्रीतिर्विनश्यति ॥ ११७॥
सूत्रार्थ- भगवान के गुणों का स्मरण करने से, संसार की आसक्ति छूट जाती है ।

सूत्रः- ईश्वरं त्यक्त्वा आचार्य प्रीतिर्दुर्लभा ॥ ११८॥
सूत्रार्थ- ईश्वर की प्रीति को छोड़कर, आचार्य की प्रीति होना दुर्लभ है ।

सूत्रः- भगवदनुग्रहेण साध्यमस्ति ॥ ११९॥
सूत्रार्थ- हाँ ! भगवत् कृपा से आचार्य प्रीति ससुलभ हो सकती है ।

सूत्रः- सदगुरु प्राप्तिरपि दुर्लभा ॥ १२०॥
सूत्रार्थ- प्रीति की बात कौन कहे, सद्गुरु की प्राप्ति भी दुर्लभ है ।

सूत्रः- भगवदनुकम्पयाचार्य लाभः ॥ १२१॥
सूत्रार्थ- भगवत-कृपा-प्रसाद से ही आचार्य का लाभ होना कहा गया है ।

सूत्रः- शतपुत्र समः शिष्यः ॥ १२२॥
सूत्रार्थः- सच्छिष्य, सद्गुरु को शत पुत्रों के समान प्रिय होता है ।

सूत्रः- आचार्यस्योपकारं स्मृत्वा शिष्यः प्रत्युपकारं कर्तुमसमर्थः ॥ १२३॥
सूत्रार्थ- आचार्य श्री के किये हुये उपकार को स्मरण करके प्रत्युपकार करने के लिये शिष्य सर्वथा असमर्थ होता है ।

सूत्रः- शिष्योपि सेवया सद्गुरुं तोषयति ॥ १२४॥
सूत्रार्थ- सच्छिष्य भी अपने समर्पण व सेवा से सद्गुरु को प्रसन्न रखता है ।

सूत्रः- अहं शून्यः गुरोरङ्गं स्वकं स्मरति ॥ १२५॥
सूत्रार्थ- अहं रहित शिष्य अपने को आचार्य का अङ्ग जानता है ।

सूत्रः- अहम्ममाभावादेवं गुरुचर्या प्रभावात् गुरु रूपो भवति ॥ १२६॥
सूत्रार्थ- अहं और मम के अभाव एवं गुरु-सेवा के प्रभाव से शिष्य गुरु रूप हो जाता है ।

सूत्रः- तस्मादाचार्यापचारः कदापि न करणीयम् ॥ १२७॥
सूत्रार्थ- महोपकारक आचार्य का परिभव कभी नहीं करना चाहिये ।

सूत्रः- शरणागतं प्रपन्नं द्वयोः सर्वप्राप्तिर्भवति ॥ १२८॥
सूत्रार्थ- शरणागत प्रपन्न को गुरुदेव और ईश्वर का सर्वस्व प्राप्त हो जाता है ।

सूत्रः- स निश्चिन्त्यतोभवति ॥ १२९॥
सूत्रार्थः- प्रपन्न वैष्णव प्रपत्ति के प्रभाव से निश्चिन्त हो जाता है ।

सूत्रः- द्वन्दातीतो भवति ॥ १३०॥
सूत्रार्थ- प्रपन्न द्वन्द्वातीत हो जाता है ।

सूत्रः- आत्मारामो भवति ॥ १३१॥
सूत्रार्थ- शरणागत वैष्णव आत्माराम हो जाता है ।

सूत्रः- भगवति प्रेम लक्षणा भक्तिर्प्रजायते ॥ १३२॥
सूत्रार्थ- प्रपत्ति स्वरूप में स्थित होने से प्रपन्न के हृदय में प्रेम लक्षणा भक्ति उत्पन्न हो जाती है ।

सूत्रः- स श्री स्वरूपो भवेज्जनः ॥ १३३॥
सूत्रार्थ- प्रपत्ति स्वरूप में स्थित होकर, प्रपन्न श्रीस्वरूप हो जाता है ।

सूत्रः- स रामाकारो भवेत् ॥ १३४॥
सूत्रार्थ- प्रपत्ता, प्रपत्ति स्वरूप में स्थित होकर रामाकार हो जाता है ।

सूत्रः- आयान्ति सर्वे भागवद्धर्माः तस्यहृदयाकाशे ॥ १३५॥
सूत्रार्थ- शरणागत वैष्णव के हृदयाकाश में सम्पूर्ण भागवत-धर्म आकर अपना निवास बना लेते हैं ।

सूत्रः- सर्व वत्वा प्रपन्नाय ईश्वरोऽपि परमः प्रसन्न ॥ १३६॥
सूत्रार्थ- प्रपन्न को भगवान भी अपना सर्वस्व देकर ही परम प्रसन्न होते हैं ।

सूत्रः- लोकेऽपि सुखं दत्वा सुखी भवति ॥ १३७॥
सूत्रार्थ- प्रपन्न भक्त को लोक की सुख-सामग्रियाँ देकर सुखी होते हैं ।

सूत्रः- प्रपत्ति कर्तृणां दोषं स्वदोषं गणयति ॥ १३८॥

सूत्रार्थ- शरणागति करने वालों के किये हुये दोष को भगवान अपना समझते हैं ।

सूत्रः- भगवत् प्रसादात् कैङ्कर्य प्राप्तिर्भवति ॥ १३९॥
सूत्रार्थ- भगवान के कृपा प्रसाद से ही भगवत् कैङ्कर्य की प्राप्ति होती है ।

सूत्रः- स्वाङ्कमपि ददातीश्वरः ॥ १४०॥
सूत्रार्थ- शरणागत वत्सल भगवान, शरणागत को अपनी गोद में बैठा कर प्यार करते हैं ।

सूत्रः- सेवया ईश्वरस्य विकसित मुखाम्भोजैव शरणागतस्य परं भोगः ॥ १४१॥
सूत्रार्थ- अपनी सेवा से प्रभु-विकसित मुखाम्भोज ही शरणागत दास का परमभोग्य है ।

सूत्रः- भगवच्चरणार्विनदैवाश्रयः ॥ १४२॥
सूत्रार्थ- शरणागत चेतन के परमाश्रय श्री भगवान के युगल चरणार्विन्द ही हैं, अन्य नहीं ।

सूत्रः- हस्तकमलमभयं ददातीश्वरस्य ॥ १४३॥
सूत्रार्थ- ईश्वर का हस्तकमल शरणागत के लिये अभयकारी होता है ।

सूत्रः- देहात्म चिन्ता प्रपत्तिं नाशयति ॥ १४४॥
सूत्रार्थ- समर्पित शरणागत चेतन की, की हुई देह व आत्मा की चिन्ता प्रपत्ति को नष्ट कर देती है ।

सूत्रः- अभिमानोऽपि प्रपत्तिं नाशयति ॥ १४५॥
सूत्रार्थ- शरणागत का किया हुआ किसी प्रकार का अभिमान प्रपत्ति स्वरूप को भ्रष्ट कर देता है ।

सूत्रः- देहाभिमानः ॥ १४६॥
सूत्रार्थ- देह में आत्म-बुद्धि होना देहाभिमान कहलाता है ।

सूत्रः- स्वरूपाभिमानः ॥ १४७॥
सूत्रार्थ- परमात्मा के स्वरूप के भीतर अपना स्वरूप न देखना स्वरूपाभिमान कहलाता है ।

सूत्रः- उपायाभिमानः ॥ १४८॥
सूत्रार्थ- भगवत्-कृपा को उपाय न मानकर, अन्य उपायों का आलम्बन उपायाभिमान कहलाता है ।

सूत्रः- उपेयाभिमानः ॥ १४९॥
सूत्रार्थ- उपेयाभिमान भगवत-कैङ्कर्य-परायण शरणागत चेतन मे नहीं होना चाहिये ।

सूत्रः- कर्तृत्वाभिमानः ॥ १५०॥
सूत्रार्थ- प्रपत्ति परायण चेतन में कर्तापन का अभिमान नहीं होना चाहिये ।

सूत्रः- ज्ञातृत्वाभिमानः ॥ १५१॥
सूत्रार्थ- ज्ञातापन का अभिमान भी प्रपन्न में नहीं रहना चाहिये ।

सूत्रः- भोक्तृत्वाभिमानः ॥ १५२॥
सूत्रार्थ- भोक्तापन के अभिमान को भी त्यागना चाहिये ।

सूत्रः- अकृतकरणं वर्जनीयम् ॥ १५३॥
सूत्रार्थ- प्रपन्न को अविहित कर्म त्यागने योग्य हैं ।

सूत्रः- भगवदपचारः न करणीयः ॥ १५४॥
सूत्रार्थ- भगवदाश्रय ग्रहण करने वाले को भगवदपचार भूलकर भी नहीं करनी चाहिये ।

सूत्रः- भागवतापचारोऽपि न कर्तव्यः ॥ १५५॥
सूत्रार्थ- भगवदाश्रयी को भगवान के अङ्गभूत भक्तों का अपचार कभी भी नहीं करना चाहिये ।

सूत्रः- असह्यापचारोऽतिक्रूरः ॥ १५६॥
सूत्रार्थ- असह्यापचार तो अति क्रूर होता है, अतः इससे बचना चाहिये ।

सूत्रः- अन्याश्रय निषेधः ॥ १५७॥
सूत्रार्थ- भगवदाश्रय के अतिरिक्त अन्य का आश्रय नहीं करना चाहिए ।

सूत्रः- समर्पण-विरोधि-कार्यं न करणीयम् ॥ १५८॥
सूत्रार्थ- समर्पण-विरोधी आचरण भूलकर भी नहीं करना चाहिये ।

सूत्रः- साधन विरोधी न मपि ॥ १५९॥
सूत्रार्थ- सिद्ध साधन शरणागति के विरोधी कार्य को कदापि न करे ।

सूत्रः- अन्यदेवालम्बनं त्याज्यम् ॥ १६०॥
सूत्रार्थ- अन्य देवालम्बन भी त्याज्य है ।

सूत्रः- प्राप्य विरोधी सर्वथैव त्याज्यः ॥ १६१॥
सूत्रार्थः- प्रपत्ति के द्वारा परम प्राप्य के विरोधी वर्ग को सर्वथा त्याग देना चाहिये ।

सूत्रः- शेष भूतोस्म्यहं तव (भगवतः)॥ १६२॥
सूत्रार्थ- हे पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम यह दास आपका शेष है ।

सूत्रः- अखण्डोच्चारणात् ॥ १६३॥
सूत्रार्थ- अखण्ड शरणागति मन्त्रों के उच्चारण से प्रपत्ति स्वरूप की सिद्धि होती है ।

सूत्रः- भगवद् भोग्योऽस्मि ॥ १६४॥
सूत्रार्थ- यह दास, परब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान श्रीरामजी का भोग्य है, अन्य का व अपना नहीं ।

सूत्रः- रक्ष्योऽस्मि भगवतः ॥ १६५॥
सूत्रार्थ- हे प्रभो ! यह दास आपकी रक्ष्य वस्तु है ।

सूत्रः- रहस्य त्रयार्थमनुसन्धेयम् ॥ १६६॥
सूत्रार्थ- रहस्यत्रय के अर्थ का अनुसन्धान करना आवश्यक है ।

सूत्रः- मन्त्रापचारो निषेधः ॥ १६७॥
सूत्रार्थ- आचार्य प्रदत्त मन्त्र का अपचार कभी नहीं करना चाहिये ।

सूत्रः- देव परिभवमपि ॥ १६८॥
सूत्रार्थ- मन्त्र के देवता का परिभव भी नहीं करना चाहिये ।

सूत्रः- तदर्थाय प्रार्थनीयः सदा हरिः ॥ १६९॥
सूत्रार्थ- रहस्य त्रयार्थ में स्थिति होने एवं मन्त्र और देव में अपचार न होने के लिये प्रभु से सदा प्रार्थना करनी चाहिये ।

सूत्रः- सत्सङ्गोहि सेवनीयः शरणागतेन ॥ १७०॥
सूत्रार्थ- प्रभु-प्रेमी भागवतों का सङ्ग, सतत सेवन करने योग्य है प्रपत्ता को ।

सूत्रः- तदविषयक ग्रन्थोऽपि पठनीयः ॥ १७१॥
सूत्रार्थ- प्रेमाभक्ति एवं प्रपत्ति विवर्धक ग्रन्थों का पठन-पाठन करना चाहिये ।

सूत्रः- आत्मान्वेषणं करणीयं मुहुर्मुहः ॥ १७२॥
सूत्रार्थ- प्रपन्न को अपनी आत्मा का अन्वेषण बार बार करना चाहिये ।

सूत्रः- स्व-प्रिय-नाम कीर्तन-व्रतः ॥ १७३॥
सूत्रार्थ- आत्मप्रिय श्री रामजी के नाम सङ्कीर्तन का व्रत लेना चाहिये ।

सूत्रः- नाम-रूप-लीलाधामष्वनुरक्तिः ॥ १७४॥
सूत्रार्थ- भगवान के नाम-रूप-लीला और धाम में प्रपन्न की अनुरक्ति होनी चाहिये ।

सूत्रः- श्रीहरि-गुरु-हरि भक्तानां कैङ्कर्यमपि ॥ १७५॥
सूत्रार्थ- श्रीहरि-गुरु और हरि-भक्तों की सेवा सदा करनी चाहिये ।

सूत्रः- हरेर्मङ्गलानुशासनं स्वरूपानुकूलम् ॥ १७६॥
सूत्रार्थ- हरि भगवान का मङ्गलानुशासन करना शरणागत प्रपन्न चेतन के स्वरूपानुकूल है ।

सूत्रः- भव ब्रह्ममयं द्रष्टुमभ्यासः ॥ १७७॥
सूत्रार्थ- प्रपन्न, संसार को ब्रह्ममय देखने के लिये तदनुसार अभ्यास करे ।

सूत्रः- दैवी सम्पत्तिर्ग्राह्या मुमुक्षुभिः ॥ १७८॥
सूत्रार्थ- मोक्ष कामियों के लिये दैवी सम्पत्ति ग्राह्य है ।

सूत्रः- नैच्यानुसन्धानं कुर्यात् ॥ १७९॥
सूत्रार्थ- शरणागत को नैच्यानुसन्धान करते रहना चाहिये ।

सूत्रः- स्वप्रपत्तिमपराध कोटेर्मत्वा क्षमापनमपि ॥ १८०॥
सूत्रार्थ- अपनी की हुई प्रभु की शरणागति को भी प्रभु का अपराध ही किया है, समझकर क्षमा करने की प्रार्थना करना भी नैच्यानुसन्धान का एक अङ्ग है ।

सूत्रः- स्वापराध कारिषु क्षमा-कृपा-कृतज्ञता उपकाराणि करणीयानि ॥ १८१॥
सूत्रार्थ- अपना अपराध करने वालों के प्रति क्षमा-कृपा-कृतज्ञता और उपकार करना चाहिये ।

सूत्रः- “सर्वे भवन्तु सुखिनः” अभिलाषयति ॥ १८२॥
सूत्रार्थ- प्रपन्न सबको सुख स्वरूप देखने की अभिलाषा करता है ।

सूत्रः- स सर्वं प्रणमति ॥ १८३॥
सूत्रार्थ- प्रपत्ति करने वाला चेतन सम्पूर्ण जड़-चेतनात्मक जगत को प्रणाम करता है ।

सूत्रः- अतोनाभ्यसूयेतकमपि ॥ १८४॥
सूत्रार्थ- इसलिये प्रभु-समर्पित चेतन को किसी की असूया नहीं करनी चाहिये ।

सूत्रः- स सर्वहितैक रतः ॥ १८५॥
सूत्रार्थ- शरणागत चेतन सर्वहित करने के स्वभाव से संयुक्त होता है ।

सूत्रः- सर्वत्र समदर्शनः ॥ १८६॥
सूत्रार्थ- शरणागत चेतन सर्वत्र सम दृष्टि वाले होते हैं ।

सूत्रः- दिनचर्या श्रुति-साधु-सदाचार्यैरनुमोदिता ॥ १८७॥
सूत्रार्थ- शरणागत की दिनचर्या श्रुति-शास्त्र-सन्त और सदाचार्य से अनुमोदित होती है ।

सूत्रः- शिष्यात्म रक्षणस्य सदाचार्यः सदा चिन्तयेत् ॥ १८८॥
सूत्रार्थ- शिष्य की आत्मा के रक्षण का चिन्तन सदाचार्य सदा करता रहे ।

सूत्रः- स्वरूप हानि दत्तापहार दोषश्च ॥ १८९॥
सूत्रार्थ- अपने ही आत्म-रक्षक बनने से स्वरूप की हानि और दत्तापहार दोष प्राप्त होता है ।

सूत्रः- शिष्योऽपि आचार्य देहानुरक्तिं तस्य शरीर रक्षणत्वञ्च चिन्तयेत् ॥ १९०॥
सूत्रार्थ- सद्शिष्य को भी आचार्य-देह में परमा प्रीति एवं उनके देह की रक्षा का चिन्तन करना चाहिये ।

सूत्रः- आचार्य स्वरूपो विनश्यति ॥ १९१॥
सूत्रार्थ- आचार्य का स्वरूप नष्ट हो जाता है ।

सूत्रः- आचार्यः स्ववस्तुमादाय एवं शिष्यः आचार्य वस्तु मादाय देह यात्रां कुर्यात् ॥ १९२॥
सूत्रार्थ- आचार्य का शरीर-निर्वाह आपनी वस्तु से और शिष्य-देह- प्रयोजन आचार्य वस्तु से होना चाहिये ।

सूत्रः- अन्यथा आचार्यः अपूर्णः एवं शिष्यः चौरो भविष्यति ॥ १९३॥
सूत्रार्थ- उपर्युक्त वार्ता के विपरीत आचरण से आचार्य का स्वरूप अपूर्ण और शिष्य का स्वरूप चौर हो जायगा ।

सूत्रः- अतो शिष्य स्वरूपो शरीरवत् धर्मवत् एवं भार्यावत् प्रयुक्तः ॥ १९४॥
सूत्रार्थ- अतः शिष्य का स्वरूप आचार्य के प्रति शरीर के समान, धर्म के समान और भार्या के समान मनीषियों द्वारा कहा गया है ।

सूत्रः- एवं आचार्य स्वरूपोऽपि शरीरीवत्, धर्मीवत्, पतिवत् प्रयुक्तः ॥ १९५॥
सूत्रार्थ- इसी प्रकार अपने प्रति सम्बन्धी शिष्य के प्रति आचार्य का स्वरूप शरीरी, धर्मी और सत्पति के सदृश कहा गया हैं ।

सूत्रः- एकैकं स्वार्थेन न वरणीयम् ॥ १९६॥
सूत्रार्थ- आचार्य और शिष्य एक दूसरे को भौतिक-स्वार्थ के लिये न वरण करें ।

सूत्रः- शिष्यः आचार्य सेवनं अमाया अहं विहीनेन् कुर्यात् ॥ १९७॥
सूत्रार्थ- शिष्य, आचार्य का सेवन अहं-विहीन छल छोड़कर करे ।

आचार्योऽपि वात्सल्येन शिष्यम्पुत्रादधिकं कृपया पालनं कुर्यात् ॥ १९८॥
सूत्रार्थ- आचार्य भी वात्सल्यादि गुणों को पुरस्सर करके अपनी अहैतुकी कृपा द्वारा स्वपुत्र से अधिक मानकर पालन करे ।

सूत्रः- शिष्येन् गुरु गौरवम्प्रकटं भवति ॥ १९९॥
सूत्रार्थ- श्री सद्गुरु देव का गौरव, शिष्यों के द्वारा सुरक्षित एवं प्रकाशित रहता है ।

सूत्रः- आचार्य कृपया शिष्यस्य स्वरूपस्थितिर्भवति ॥ २००॥
सूत्रार्थ- आचार्य-कृपा से शिष्य की स्वरूप स्थिति बन पाती है ।

सूत्रः- एवं परस्परं हित-प्रयं कुर्यात् ॥ २०१॥
सूत्रार्थ- आचार्य और शिष्य परस्पर एक-दूसरे के हित और प्रिय करने की चेष्टा से युक्त होते हैं ।

सूत्रः- लता वृध्यर्थाय शाखामिव ॥ २०२॥

सूत्रार्थ- लता की परिवृद्धि के लिये जैसे कोई शाखा सहायिका सिद्ध होती है, उसी प्रकार आचार्योपदिष्ट वार्ता की वृद्धि के लिये भागवतो की उपयोगिता है ।

सूत्रः- साधन समुञ्चयः न हेतु भूतः प्रभु प्राप्त्यर्थाय न अकृतकरण समुञ्चयः विरोधाय समर्थः ॥ २०३॥
सूत्रार्थ- परब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान की प्राप्ति के लिये महान से महान सर्व साधनों का समुज्वय समर्थ नहीं हो सकता और न सम्पूर्ण अविहित कर्मों का समुञ्चय-विरोधक बन सकता ।

सूत्रः- अतो भगवत्प्राप्ति हेतुर्भगवत्कृपैव ॥ २०४॥
सूत्रार्थ- अतः प्रभु-प्राप्ति के लिये भगवत्कृपा ही कारण है ।

सूत्रः- आर्तपूर्णा प्रपत्तिरेव कृपा प्राप्तेः कारणम् ॥ २०५॥
सूत्रार्थ- आर्ति पूर्ण प्रपत्ति ही भगवत्-कृपा-प्राप्ति की हेतु-भूता है किन्तु उपाय स्वरूपा नहीं क्योङ्कि भगवान ही सर्व स्वतन्त्र निरङ्कुश स्वामी हैं ।

सूत्रः- भरतस्य प्रपत्तिर्नासिद्धा ॥ २०६॥
सूत्रार्थ- श्रीभरत जी की शरणागति असिद्ध नहीं हुई अपितु शीघ्र फलप्रदा सिद्ध हुई है ।

सूत्रः- श्रीरामस्य प्रपत्तिरपि ॥ २०७॥
सूत्रार्थ- समुद्र के प्रति की हुई श्रीराम जी की शरणागति भी असिद्ध नहीं हुई ।

सूत्रः- अतो प्रपत्तिरेव गरीयसी, प्रपतिरेव गरीयसी, परपत्तिरेव गरीयसी ॥ २०८॥
सूत्रार्थ- इसलिये त्रिसत्य है कि प्रपत्ति ही श्रेष्ठ है, प्रपत्ति ही श्रेष्ठ है, प्रपत्ति ही श्रेष्ठ है ।

सूत्रः- प्रपत्तिकर्तृषु वर्णाश्रम धर्मानुसारेण कार्याकार्य व्यवस्थितिर्भवति न वा ॥ २०९॥
सूत्रार्थ- परब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान की शरणागति करने वाले प्रपन्न मे वर्णाश्रम धर्म के अनुसार कार्याकार्य व्यवस्थिति होती है या नहीं?

सूत्रः- शास्त्र संरक्षणं प्रपत्तेरनुकूल कार्यम् ॥ २१०॥
सूत्रार्थ- शास्त्र संरक्षण करना प्रपत्ति का स्वरूपानुकूल कार्य है ।

सूत्रः- अन्यथा पातित्य भयम् ॥ २११॥
सूत्रार्थ- अन्यथा पतन का भय है ।

सूत्रः- सर्वोच्च स्थितेप्राप्तौ वेदाः स्वयमेव तस्योपरि शासनं न कुर्वन्ति ॥ २१२॥
सूत्रार्थ- शरणागत चेतन की सर्वोपरि स्थिति हो जाने पर, वेद स्वयं उसके ऊपर से अपना शासन उठा लेते हैं ।

सूत्रः- सञ्चित क्रियमाणानि कर्म फलानि स्वयमेव विनश्यन्ति ॥ २१३॥

सूत्रार्थ- शरणागत चेतनों के किये हुये सञ्चित और क्रियमाण कर्मा के फलकर्ता को न प्राप्त होकर स्वयं विनष्ट हो जाते हैं ।

सूत्रः- गुरुणा बोधनीयः मुहुर्मुहुः ॥ २१४॥
सूत्रार्थ- प्रपत्ति-पथ-विचलित साधक, सद्गुरु द्वारा बार-बार बोध कराने योग्य है ।

सूत्रः- भागवतापचारोस्यात ॥ २१५॥
सूत्रार्थ- भागवतापचार हो जायगा ।

सूत्रः- तस्यहितार्थाय ईश्वर प्रपत्तिमेवं मङ्गलानुशासनं कुर्यात् ॥ २१६॥
सूत्रार्थ- सद्गुरु को शिष्य-हित-चिन्तन करके प्रभु की शरणागति एवं उसका मङ्गलानुशासन करना चाहिये ।

सूत्रः- भरत सदृशं स्वस्वरूपम् ॥ २१७॥
सूत्रार्थ- श्रीभरत जी के समान आत्म स्वरूप होता है ।

सूत्रः- रामः परस्वरूपस्य साक्षात् मूर्तिः ॥ २१८॥
सूत्रार्थ- श्रीराम जी महाराज परस्वरूप की साक्षात् मूर्ति हैं ।

सूत्रः- उपायस्य स्वरूपो सीतावत् ॥ २१९॥
सूत्रार्थ- उपाय का स्वरूप श्रीजानकी जी की भाँति जानना चाहिये ।

सूत्रः- उपेय-प्रीतिर्लक्ष्मणवत् ॥ २२०॥
सूत्रार्थ- उपेय-प्रीति श्रीलक्ष्मण जी के समान होनी चाहिये ।

सूत्रः- अतो कैङ्कर्य कर्मणि उत्कृष्टापकृष्ट भावना न कुर्यात् कदाचन् ॥ २२१॥
सूत्रार्थ- अतएव भगवत् कैङ्कर्य में ऊँच-नीच का विचार कभी नहीं करना चाहिये ।

सूत्रः- विरोधी स्वरूपो कैकेयीवत् ॥ २२२॥
सूत्रार्थ- विरोधी स्वरूप कैकेयी के सदृश होता है ।

सूत्रः- स्वरूपज्ञ शरणागतस्य सर्व समीचीनं भवति ॥ २२३॥
सूत्रार्थ- स्वरूपज्ञ शरणागत चेतन का सब कुछ समीचीन होता है ।

सूत्रः- शरणागतस्यासमीचीनं समीचीनं भवति ॥ २२४॥
सूत्रार्थ- शरणागत का असमीचीन भी समीचीन हो जाता है ।

सूत्रः- शरणागत विरोधकस्य दुर्दशा बालिवत् ॥ २२५॥
सूत्रार्थ- शरणागत चेतन से विरोध करने वाले की दुर्दशा वालि वानर की भाँति होती है ।

सूत्रः- प्रपत्तिं कृत्वा तत् विरोधी कार्य कर्तारः द्विविद् वत् ॥ २२६॥

सूत्रार्थ- शरणागति करके शरणागत विरोधी कार्य करने वाले की दशा द्विविद् वत् होती है ।

सूत्रः- शरणागति समर्थकस्य गतिर्हनुमानवत् ॥ २२७॥
सूत्रार्थ- शरणागति सिद्ध साधन का समर्थन करने वाले की गति श्री हनुमान जी जैसी होती है ।

॥ श्रीसीतारामार्पणमस्तु ॥

Encoded and proofread by Mrityunjay Rajkumar Pandey

Prapatti Darshana Sutrani

pdf was typeset on June 20, 2024

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*